# The Oneness Translation Project

**Hindi Translation**
**Translated by Ravi Prakash**

# अध्याय १

## एकात्मता

हम सभी एक हैं. हम उसी ईश्वर के अंग हैं, जिसके आप हैं. हम सागर में जल की एक बूंद के समान हैं उससे एकत्व के बंधन में बंधे हुए हैं, हम उसी से बने हैं और उसी की ओर अग्रसर हैं, इसी में हमारी पहचान तथा स्वयं के होने की अनुभूति निहित है. यह अनुभूति ही संपूर्णता है. सब कुछ सम्मिलित है. यह अनुभूति सभी बंधनों के विपरित है. यह आपको शिखर के उस केन्द्र बिन्दु पर ले जाती है, जहां आप बंधन की धारणा से अनभिज्ञ रहते हुए वर्तमान का सामना करते हैं.

इस सृष्टि के साथ एकत्व की भावना को मन में धारण कर आप आगामी होने की बजाय बहुआयामी होकर स्वयं को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त करेंगे. यह जीवंतता की वास्तविक अवस्था है. इस सत्य को ध्यानपूर्वक पहचान कर तथा स्वयं के वास्तविक रूप तथा चेतन अवस्था द्वारा इसकी अनंत अभिव्यक्ति को प्रोत्साहन देकर, आप स्वयं के विस्तार की संभावनाओं के द्वार खोलते हैं एवं अपनी समझ तथा अनुभूतियों को संग्रहित करते हैं, जो आपके जीवंत रूप को उसकी विशेषताएं प्रदान करती हैं. यह आपके उस विस्तार से जुड़ी एकात्मकता की अवस्था है, जिसके लिए आप वर्तमान में संघर्ष कर रहे हैं.

इन शब्दों को पढ़कर आकृष्ट होने का अर्थ है कि आप आत्मबोध के अधिक उंचे स्तर तक पहुंच चुके हैं. अब वास्तविकता की प्रकृति के संदर्भ में आपकी अनुभूति और समझ आपके द्वारा पूर्व में स्वीकार की गई क्या है और क्या नहीं वाली प्रकृति से ऊपर उठ चुकी है. क्या है अथवा क्या नहीं है, की महत्व वाली संस्कृति पर आपका ध्यान केन्द्रित हो चुका है. आपको यह विश्वास हुआ है कि अपनी वास्तविकता के संदर्भ में आपकी समझ एक भ्रम मात्र है और चूंकि आपकी अनुभूतियां, उन्हें पैदा करने वाले विचारों की सांकेतिक प्रतिनिधि है, अतः ये निस्संदेह रूप से वास्तविक हैं.

आपकी इन्द्रियों ने आपको जो दिखाया है, वही वास्तविकता के विषय में आपका अनुभव है. आपका संसार, जिसमें आपकी क्रियाएं एवं आपके विचार उनका वरण करने वालों के आगे पीछे होते हैं, वास्तविक हैं और जीवन से आपके जुड़ाव की आपकी स्वाभाविक अनुभूति, जो कि भैतिक इन्द्रियों के माध्यम से ज्ञात नहीं हो सकती हैं, निस्संदेह वास्तविक हैं. यह संकल्प एवं अभिलाषा के धागों से बुनी हमारी नियति को समझने की दिशा और उससे हमारे जुड़ाव की वह तलाश है, जिसके लिए हम परस्पर संघर्ष कर रहे हैं.

आप जिस प्रकार से वास्तविकता को जानना चाहते हैं, यह प्रक्रिया उसके अस्तित्व पर ही विराम लगा देगी. आपको अपने निकट आने वाले इस विचार परिवर्तन का अनुभव नहीं होगा, यद्यपि तत्कालीन घटित होने वाली परिस्थितियां इसके अर्थ का संकेत दे सकती हैं. अनुभूति की उच्चत्तम स्थिति के लिए अग्रसर होने पर आप परिवर्तन के क्षण में उस स्वाभाविक बोध को प्राप्त करते हैं, जिसमें आपके अस्तित्व की उच्चत्तम स्थिति है, जहां आपकी ऊर्जा एक अभूतपूर्व गति से प्रवाहित होती है. जैसे-जैसे आप चेतना के इस परिवर्तन की ओर अग्रसर होते हैं, आपको उस विराट वास्तविकता का आभास होना प्रारंभ हो जाता है. आप उस वास्तविकता के स्वरूप को देखने योग्य हो जाएंगे, जिसका अनुभव भौतिक इन्द्रियों से नहीं किया जा सकता है. आप नए दृष्टांत की भविष्यवाणी करने वाले अग्रदूतों के दृष्टिकोण को सुने बिना और इससे संबंधित कोई पुस्तक पढ़े बिना अपने अस्तित्व की असीमित अवस्था की प्रकृति को पहचान जाएंगे. आखिरकार जैसे-जैसे आप स्वयं को एकात्मता के स्वरूप की तरह महसूस करेंगे और इसका समर्थन करेंगे. आप किसी से भिन्न नहीं रहेंगे. निस्संदेह आप एकात्मकता के ही स्वरूप हैं.